

जनजातीय समुदायों में केशों के सौन्दर्यवर्द्धन हेतु प्रयुक्त की जाने वाली औषधियाँ

शिवांगी सिंह*, प्रो. (डॉ) देवेन्द्रनाथ पाण्डे**

सारांश

मध्य भारत की प्रमुख जनजातीय समूह जैसे लोधा, मुंडा, उरांव एवं संथाल के बीच पिछले 20 वर्षों के क्षेत्रीय अध्ययनों के दौरान एवं बार-बार सत्यापन के बाद दर्ज किए गए हैं। इन सभी समुदायों की परंपरा, संस्कृति, विश्वास एवं हर्बल विरासत समृद्ध रही है। पौधों के संरक्षण की जनजातीय अवधारणा एवं पद्धति के बारे में जानकारी देने के लिए प्रयास किए गए हैं। ये आधुनिक संरक्षण पद्धतियों के अनुरूप हो सकते हैं एवं जनजातीय समुदायों की जीवन शैली को प्रभावित किए बिना संरक्षण कार्यक्रम तैयार करने में सहायक हो सकते हैं। देश के प्रत्येक आदिवासी समूह एवं जातीय समुदाय के पारंपरिक ज्ञान प्रणाली एवं स्थानीय वनस्पतियों तथा विशिष्ट आवास में उपलब्ध अन्य प्राकृतिक संसाधनों के बारे में ज्ञान होता है। वैज्ञानिक विज्ञान की एक नई शाखा नृवंशविज्ञान, विशेष रूप से जनजातीय चिकित्सा अथवा नृजातीय चिकित्सा के अध्ययन पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। भारत में भी बड़ी संख्या में वैज्ञानिक एवं विद्वान ज्ञान के इस नए क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। जिनमें डी.सी.पाल, एस. जैन, पी.के. भौमिक, ई. एफ. बुडवर्ड, पी. जी. शानवारे एवं ए. के. मुखर्जी प्रमुख हैं।

शब्द कुंजिका – मध्य देशीय, जनजातीय, सौन्दर्य, औषधि, केश।

परिचय

1960 के दशक से इस अध्ययन में तेज़ी आई है। भारत अपनी 45,000 पादप प्रजातियों एवं 160 भाषाई समूहों से संबंधित 550 जनजातीय समुदायों के साथ, विविध भौगोलिक एवं जलवायु क्षेत्रों में विविध पादप प्रजातियों, विविध संस्कृतियों, समृद्ध पारंपरिक ज्ञान प्रणाली एवं ज्ञान के साथ निवास करता है, जो नृजातीय वनस्पति विज्ञान का एक विशाल भंडार है। प्रकृति के निकट रहने वाले, जनजातीय समुदाय, परिवेशी वनस्पतियों एवं जीवों तथा पादप चिकित्सा (नृजातीय चिकित्सा) की समृद्ध विरासत के बारे में अद्वितीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली एवं ज्ञान के संरक्षक हैं। डॉ. स्कटल्स का मत है कि "भारत अपने विविध जातीय समूहों, संस्कृति, अनुष्ठानों एवं अनुष्ठानों के इतिहास, जो आधुनिक दुनिया से कमोबेश पृथक-पृथक हैं एवं आसपास की वनस्पतियों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं। नृवंशविज्ञान जनजातीय औषधियों के अनुसंधान का एक केंद्र है, भारत में औषधीय पौधों के रूप में अब तक ज्ञात 3200 प्रजातियों में से, 298 वंशों एवं 98 कुलों के अंतर्गत कुल 343 प्रजातियों का उपयोग चार प्रमुख जनजातीय समूहों, अर्थात् संथाल, मुंडा, उरांव एवं लोधा द्वारा औषधि के रूप में किया जाता है।¹

विशेष समुदाय अथवा जनजातीय समूहों के उपयोगों से संबंधित पौधे एवम उनके उत्पाद देश के विभिन्न संग्रहालयों में प्रदर्शनी के रूप में प्रदर्शित किए गये हैं। भारतीय संग्रहालय, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, कलकत्ता

* अतिथि सहायक आचार्य, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, महाराजा सुहेलदेव विश्वविद्यालय, आजमगढ़।

** डॉक्टर (प्रो.) देवेन्द्र नाथ पाण्डे, सेवानिवृत्त वरिष्ठ आचार्य एवं भूतपूर्व विभागाध्यक्ष- संज्ञाहरण विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

संग्रहालय एवम कलकत्ता विश्वविद्यालय के आशुतोष संग्रहालय में औषधीय पौधों पर उपलब्ध आँकड़ों को भी शामिल करने का प्रयास किया गया है।²

अध्ययन की प्रासंगिकता

मध्य प्रदेश के गोंडों की पादप चिकित्सा पर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह तर्क दिया जा सकता है कि पादप प्रजातियों के चिकित्सीय उपयोगों पर जनजातीय ज्ञान प्रणाली का व्यावहारिक रूप से कोई व्यापक विवरण अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। वास्तव में एक या दो व्यक्तियों या शोधकर्ताओं के एक समूह के लिए भारत के सभी जनजातीय समुदायों का गहन अध्ययन करना संभव नहीं है, लेकिन जनजातीय समुदायों के कुछ चुनिंदा समूहों से एक छोटी सी शुरुआत की जा सकती है। इसे ध्यान में रखते हुए, वर्तमान कार्य निचले गंगा के मैदानों के लोधा, मुंडा, उरांव एवं सथाल जनजातियों पर किया गया है, जो भारत का एक विशिष्ट पादप-भौगोलिक क्षेत्र है।

शोध कार्य की आवश्यकता क्यों

जनजातीय समाज में जादू-टोना, भूत-प्रेत, बलि एवं क्षमा-प्रार्थना सहित पहले चरण के पूरा होने के बाद भी उपचार विफल हो जाता है, पश्चात उपचार का दूसरा चरण, अर्थात् औषधीय पौधों का अर्क, काढ़ा, चाय, लेप, गोलियाँ एवं मिश्रण के रूप में अथवा अन्य अवयवों या पौधों के अन्य भागों के साथ आंतरिक एवं बाह्य दोनों रूपों में प्रयोग किया जाता है। आमतौर पर स्थानीय वैद्य एवं ओझा, जड़ी-बूटियों से उपचार निर्धारित करते हैं।³ कुछ ओझा स्वप्न में मार्गदर्शन के माध्यम से उपचार निर्धारित करने का दावा करते हैं। सामान्यतः जनजातीय ओझा जड़ों, पौधों एवं लताओं का उपयोग करते हैं, जनजातीय लोगों को पौधों के चिकित्सीय गुणों के बारे में विशिष्ट ज्ञान रखते हैं। यह देखा गया है कि जनजातियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले कई पौधों में महत्वपूर्ण यौगिक होते हैं, जिनका उपयोग चिकित्सा एवं वाणिज्य में किया जा सकता है। इसलिए आधुनिक चिकित्सा जनजातियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले औषधीय पौधों पर अधिक ध्यान आकृष्ट कर रहा है।

उद्देश्य

जनजातीय सामुदायों में सौंदर्यवर्द्धन हेतु अनेक औषधियाँ प्रयुक्त की जाती हैं। जिनमें केशों की गुणवत्ता बढ़ाने, लम्बे, चमकदार, घनत्व, जूँ आदि से निवारण, इसके अतिरिक्त पौधों का दस्तावेजीकरण भविष्य के शोध को प्रोत्साहित करेगा एवं नृवंशविज्ञानियों, वनस्पतिशास्त्रियों, शोध रसायनज्ञों, औषध विज्ञानियों, पारंपरिक चिकित्सकों एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूक व्यक्तियों की आवश्यकताओं को पूरा करेगा।

केशों के सौंदर्यवर्द्धन हेतु औषधियों के वैज्ञानिक नाम, औषधियों के जनजातीय नाम, औषधियों के सामान्य नाम एवं सौंदर्यवर्द्धन में उपयोग कि संक्षिप्त सारणी अगलिखित है।

औषधियों के वैज्ञानिक नाम	औषधियों के जनजातीय नाम	औषधियों के सामान्य नाम	सौंदर्यवर्द्धन में उपयोग
मेलास्टोमा मैलाबैथ्रिकम	दंत-गी-गिरी	भारतीय एवं सिंगापुर रोडोडेंड्रोन, बुरांस अथवा बुरुश	उरांव जनजातीय लोग बालों की जूँओं को हटाने के लिए चिपचिपे पत्तों से सिर को पोंछते हैं। ⁴
श्लैचिआ ओलेओसा	कुसुम, बेरू, पुसर	लॉक ट्री, मैकासर	जातीय समुदाय बालों के विकास को बढ़ावा

जनजातीय समुदायों में केशों के सौन्दर्यवर्द्धन हेतु प्रयुक्त की जाने वाली औषधियाँ

		ऑयल ट्री, सीलोन ओक	देने के लिए सिर पर इस औषधि के बीज का तेल लगाते हैं। ⁵
एक्लिप्टा अल्बा	पीरी-केसरी, कल-केसरी, बंदा-कांदा	येबाडेटाजो	बालों की वृद्धि के लिए इस औषधि की पत्तियों को पीसकर सिर पर लगाते हैं। इसका प्रयोग प्राकृतिक हेयर डार्ई के रूप में भी किया जाता है। ⁶
इवोवुलस अलसिनोइड्स:	मूसा- कानी, बाली- जौदाहा (लो.); जंगी-बा (सा.)।		लोथा लोग बालों के अच्छे विकास के लिए सिर पर सरसों के तेल (3:1) के साथ इस औषधि पौधे के लेप का भी प्रयोग करते हैं। ⁷
हिबिस्कस रोजा-सीनेन्सिस	जोबा-बाथा	चीनी-हिबिस्कस	ओरां व एवं अन्य जातीय समुदाय बालों को काला करने के लिए इसके फूलों के पेस्ट का उपयोग करते हैं। ⁸
वेन्टीलागो मद्रासपाटाना:	रोक्तो-कई, सांग सर्जोम, बोंगा सर्जोम, डो- सरोई	बकथॉने- क्लिम्बर	संथाल जनजातीय के लोग बालों के विकास को बढ़ावा देने के लिए सिर पर हल्दी के पेस्ट को साथ इस औषधि बीज का तेल को (5:2) के अनुपात में लगाते हैं। ⁹
टेक्टोना ग्रैन्डिस	सागोन	टीक, दिअती	संथाल लोग केश वृद्धि के लिए सागोन के फूल को करोंजी के बीज के तेल के साथ लगते हैं। ¹⁰
अल्बिजिया प्रोसरे	पोंदरक- दारू , कारोई, सफेद सिरिस	हिल सिरिस्सा	लोथा लोग इस औषधि का सुखा चूर्ण जूँ को मारने के लिए प्रयुक्त करते थे। ¹¹
अज्जदिराचाता इंडिका	नीम-दारू, बोकोम दारू	नीम, मारगोस ट्री	लोथा लोग अपने केशों की लम्बाई बढ़ाने के लिए नीम तेल लगते हैं। ¹²
बोस्वेल्लिया सेर्राटा	लोबान दारू , सोलई	इंडियन ओलिबनुम ट्रू, इंडियन फ्रैंकीन्संस	लोथा लोग सरसों तेल में इस औषधि को 3:1 अनुपात में मिला कर केशों में लगते हैं जिससे केशों की लम्बाई बढ़ती है। ¹³
डायोस्कोरिया बल्बिफेरा	जो- सांग,बेंगोसंग	पोटैटो – याम, एर-पोटैटो	कुछ जनजातीय इसकी लकड़ी के सुखा कर चूर्ण को जूँ मरने के लिए प्रयुक्त करते हैं। ¹⁴
एवोलवुलस अल्सिनोदेस	मूसा-कनी, बाली- जौदाहा,जुंगी-बा		लोथा लोग इस पौधे के लेप को सरसों के तेल में 3:1 के अनुपात में लगाते हैं जिससे केशों की लम्बाई बढ़ती है। ¹⁵

लॉसोनिया इनमिस	हीना, बिन्दी- मिंडी, मेहंदी	हीना	लोथा लोग हीना को काली मिर्च के साथ 5:3 के अनुपात में मिलाकर लगते हैं जिससे केश सुन्दर एवं लम्बे होते हैं। ¹⁶
मंगनीफेरा इंडिका	उली दारू, आमाती,	मंगो	संथाल लोग सिर के बालों के झड़ने पर औषधि के बीज पत्रों के काढ़े का प्रयोग करते हैं। ¹⁷

निष्कर्ष

पौधों की प्रजातियों को उनके वानस्पतिक नामों, उनके परिवारों और महत्वपूर्ण पर्यायवाची शब्दों के अनुसार वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया गया है। जनजातीय या अन्य लोक नाम, सामान्य नाम महत्वपूर्ण विशेषताओं सहित संक्षिप्त वानस्पतिक विवरण, फेनोलॉजी और वितरणात्येक पादप प्रजाति के उपयोग की जानकारी सूचना स्रोतों, अर्थात् जनजातीय समुदायों जैसे- लोधा, मुंडा, उरांव, संथाल और अन्य जातीय समुदायों के अनुसार व्यवस्थित की गई है। औषधीय गुणों से प्रत्यक्ष उपयोगों पर चर्चा शामिल की गई है। वैज्ञानिक नाम से उत्पादक पौधों की अंतरराष्ट्रीय पहचान संभव हुई है। वैज्ञानिक रूप से उनका अध्ययन कर जानकारी एकत्र करना एवं उसका दस्तावेजीकरण करना अनिवार्य है।

ग्रन्थ सूची

1. पाल डी.सी. , जैन.एस.के., ट्राइबल मेडिसिन,नया प्रकाश 206 बिधा सारणी कोलकाता 700 006,1998
2. वही
3. कनोजिया एस.पी. एवं सूरज अरुण, जड़ी बूटी की खोज कैसे करे एवं एकौषधि चिकित्सा, सूरज आयुर्वेदिक केन्द्र,एल /वन - 53-ए, कालकाजी नई, दिल्ली, 2003
4. टोप्पो विरेन्द्र, उराव समाज में परम्परागत चिकित्सा पद्धति का मनोविज्ञान अध्ययन,भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार, अन्थ्रोपोलोजी सर्वे ऑफ़ इण्डिया, कोलकाता, 2006
5. चौधरी, एम. दिव्य औषधि विज्ञान, चौकम्भा ओरिएण्टल, दिल्ली, 2012
6. तिवारी, शिव कुमार, मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,रविन्द्रनाथ ठाकुरमार्ग बानगंगा, आई.यस.यस.एन.:81-7327-003-1
7. भौमिक, पी. के. द लोधासऑफ़ वेस्ट बंगाल- द सोसिओ -इकोनॉमिक सर्वे,पुन्थी पुस्तक, कोलकाता, 1963
8. वही
9. बेडिंग, पी. ओ. (आर.वी.) स्टडीस इन संथाल मेडीसिन एंड कनेक्टेड फोकलोर, प्रथम एवं द्वितीय खंड, कोलकाता एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल, 1925
10. वही
11. जैन.एस.के, स्टडीस इन इंडियन एथनोबॉटनी लेस नोन कॉमन प्लांट्स फ्रॉम ट्राइबल एरिया ऑफ़ मध्य प्रदेश, बोटेनिकल सर्वे ऑफ़ इण्डिया, कोलकाता, 1963

जनजातीय समुदायों में केशों के सौन्दर्यवर्द्धन हेतु प्रयुक्त की जाने वाली औषधियाँ

12. जैन.एस.के, मेडीकल प्लांट्स लोर ऑफ़ द ट्राइबल ऑफ़ बस्तर, स्प्रिंगर नेचर,वोल्यूम-19, 1965.
13. जैन.एस.के, राव.आर.आर. अ हैण्ड बुक ऑफ़ फ़िल्ड एंड हेर्बेरियम मेथडस, न्यू दिल्ली, टुडे एंड टुमारो प्रिंटेर्स एंड पब्लिसर 1977
14. जैन.एस.के, मेडिसनल प्लांट्स, नेशनल बुक ट्रस्ट इन्डिया प्रकाशन, 1968
15. राव, टी. ए. पी. जी. शानवारे एवं ए. के. मुखर्जी, इकोलॉजी स्टडीज ऑन द कोस्टल सैंड डून्स एंड सलाक्स इन द विसिनिटी ऑफ़ मिदनापुर, 1974
16. पाल, डी.सी. एवं जे.एन. श्रीवास्तव, प्रेलिमिनरी नोट्स ऑन इथेनोबॉटनी ऑफ़ सिंहभूम डिस्ट्रिक्ट बिहार, बोटैनिकल सर्वे ऑफ़ इण्डिया, 1979,
17. वुडवर्ड, ई. एफ, लिटेरेचर सर्च फॉर यूज ऑफ़ न्यू बोटैनिकल ड्रग्स, अमेरिकन केमिकल सोसाइटी,वोल्यूम-16, 1954,आई.एस.बी.यन 13: 9780841200173

